हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम –
धीरज व सहनशीलता के आदर्श

इसलाम की क़ुर्बानियों के इतिहास से भरी पडी है। ज़िल हिज्जा के साथ हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम की याद अनिवार्य रूप से आती है। मनासिक हज्ज हों या क़ुर्बानी का अवसर, मक्के की वाद हो या मीना व अ़रफात की घाटियां, सफा व मरवा की चट्टाने हों या चाह ज़मज़म का आब शीरें, हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम की याद अहले इसलाम को एक नय जोश व उत्साह से आयोजित करती है।

आप के स्मरण से मृतक दिलों को नव जीवन मिलता है। निराश दिल को प्रोत्साहन मिलता है। आप के घटनाएं सुन्ने से अखीदा व विश्वास में दृढ़ता एवं अमल में शीतलता पैदा हो जाती है।

अल्लाह तअ़ाला ने पैगम्बरों को मोअ़जज़े (चमत्कार) प्रदान किए। कोई नबी बिना चमत्कार के नही आएँ। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को भी अल्लाह तअ़ाला ने विशाल चमत्कार व मोअ़जज़ा प्रदान किया तथा आप के धन्य जीवन को मानवता के लिए कर्म में आदर्श बनाया।

आप ने जीवन के हर अभिनय में इसलाम धर्म की साहस के लिए अपना हर क्षण, हर सांस त्याग कर दिया, यहाँ तक के अपना धन, अपनी औलाद एवं अपनी जान भी अल्लाह तअ़ाला के लिए बलिदान कर दिया।

अल्लाह तआ़ला जब किसी बन्दे को अपना प्रिय व प्यारा बनाना चाहता है तो इस को कडा परीक्षा तता कठिन कसौटी के स्तर से गुज़ारता है। जब बन्दा परीक्षा में सफलता प्राप्त करता है तो इस को अपना प्रिय बना लेता है।

किन्तु पैगम्बरों को अल्लाह तआ़ला प्रथम अपना बनाता है। फिर इन्हें परीक्षा की स्तर से गुज़ारता है। पैगम्बरों की परीक्षा केवल इस लिए होती है के कायनात को इन लोगों का धर्मनिष्ठा व दृढ़ता बताई जाए।

जिसके वजह से समुदाय- परीक्षा व कसौटी के समय इन की धर्मनिष्ठा को पेश नज़र रखते एवं उसे लक्ष्य में सफलता प्राप्त होने में सरलता हो।

जैसा के अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- और याद करो जब इबराहीम (अलैहिस सलाम) को उनके रब ने कुछ बातों में परीक्षा ली तो उन्होंने उनको पूरा कर दिखाया।

(सुरह अल बक़राः 02:124)

आयत में वर्णन *कलिमात* से कया तात्पर्य है, इस के अनेक विस्तारें की गई हैं। चौथी सदी के मुहद्दिस इब्न अबी हातिम रहमतुल्लाहि अलैह ने *कलिमात* के विस्तार में ये रिवायत अनुच्छेद किया हैः-

भाषांतरः- हज़रत सैयदना अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, इन्हों ने फरमायाः वे कलिमात जिन के द्वारा हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम की परीक्षा ली गई एवं इन्हों ने उसे पूरा किया उस से तात्पर्य यह है के जब अल्लाह तआ़ला ने समुदाय से एकान्त प्रयोग करने का आदेश दिया तो हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम अल्लाह के लिए अपने

समुदाय (क़ौम) से अलग हो गए। आप ने अल्लाह तआ़ला के बारे में नमरूद से वादविवाद किया यहाँ तक के उसे ऐसे मामले में अनुत्तरित कर दिया जिस में उन लोगों को विवाद था। जब लोगों ने आप को आग में जलाना चाहा तो आप ने आग में ड़ाले जाने पर सहनशीलता दिखाई। जब अल्लाह तआ़ला ने समुदाय की भलाई कहने का आदेश दिया तो आप ने अपने देश एवं राज्य से अल्लाह के लिए प्रवासन किया। आप ने मेहमानी का दस्तूर स्थापित रखा और धीरज रखा। जिस का अल्लाह तआ़ला ने आप को आदेश दिया था। जब अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्बानी का कर्म किया तो आप ने अपने धन को क़ुर्बान किया। अपने नंदन की क़ुर्बानी के द्वारा आप की परीक्षा ली गई। फिर जब हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने परीक्षा व इम्तहान की इन सम्पूर्ण कठिन व दूभर गुज़ार घाटियों को पार कर लिया एवं परीक्षा की कसौटी पर अटल उतरे तो अल्लाह तआ़ला ने आप से फरमायाः आज्ञापालन किजीए! आप ने विनती कीः मैं ने अल्लाह तआ़ला की आज्ञापालन की, जो सम्पूर्ण जहानों का पालनहार है। आप का यह विचारधारा, ऐसे समय रहा जबके लोग आप की विरोध करते थे तथा आप लोगों से अलग रहना अपना चुके थे।

(तफसीर इ़ब्न अबी हातिम, सुरह अल बक़राः 124)

बन्दा संसार में इसी लिए आया है के अल्लाह की प्रज्ञान प्राप्त करे एवं सवेरे-शाम इस की इ़बादत व उपासना में व्यस्त रहे। बन्दे को 3 कार्य के कारण से अल्लाह तआ़ला की प्रज्ञान प्राप्त होती है।

(1)- जात की प्रज्ञान, जो खूदी की क़ुर्बानी (त्याग) से प्राप्त होती है।

(2)- गुण व लक्षण के प्रज्ञान, जो औलाद की कुर्बानी से मिलता है।

(3)- कर्म के प्रज्ञान, जो धन की कुर्बानी से भाग्य होती है।

जब तक यह 3 क़ुर्बानियां ना दी जाएं अल्लाह की मुहब्बत कमा हक़्क़ा नहीं मिलती एवं ना ही बन्दा इन क़ुर्बानियों के बिना कमाल पा सकता है।

(रूह उल बयान, जिल्द 7, पः 474, सुरह अल सिफातः 104/105)

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने अल्लाह की मुहब्बत व प्रेम में इन तीनों कार्य को परिणाम दिया आप ने जान की क़ुर्बानी व त्याग किया, धन भी खर्च किया एवं औलाद को भी क़ुर्बानी किया।

अल्लाह के मार्ग में धन की क़ुर्बानी

मुहब्बत के गुण व लक्षण यह बताई गई के चाहने वाला जो कर्म करे अपने प्रिय के लिए ही करे। सुनना चाहे तो केवल प्रिय की बात सुने एवं वार्तालाप करे तो इसी का वर्णन करे। सैयदना इबराहीम अलैहिस सलाम अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में इतना व्यस्त रहे के खुद अल्लाह के ज़िक्र में व्यस्त रहते।

किसी और से अल्लाह तआ़ला का वर्णन सुनते तो अल्लाह के ज़िक्र से आनन्दित होते। ज़िक्र की मिठास व मधुरता के प्रभाव से इस प्रकार प्रभावित होते के ज़िक्र करने वाले व्यक्ति से बार-बार ज़िक्र करने की इच्छा फरमाते और अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र से कोई क़ुर्बानी की नौबत आ जाती तो दून ना करते।

अल्लाह तआ़ला ने अपने मित्र को धन व सम्पत्ति की अधिकता प्रदान किया। जैसा के तफसीर रूह अल बयान में हैः-

भाषांतरः- आप के पास बकरियों के 5000 रेवड़ एवं 5000 गुलाम थे. बकरियों की सुरक्षा के लिए जो कुत्ते थे इन के लगों में सोने के पट्टे रहते थे। फरिश्तों को इस बात से आश्चर्य हुआ के आप के पास अधिकता से धन उपलब्ध है। इस के साथ साथ आप अल्लाह तआ़ला के मित्र हैं। खलत स्थान पर आभूषण हैं। धन व सम्पत्ति की यह स्थान खलत का एक जात में जमा होने से फरिश्ते आश्चर्य हुए।

(रूह उल बयान, जिल्द 7, पः 474, अल सिफातः 104/105)

तसबीह सुनने के बिना सम्पूर्ण धन त्याग कर दिया

अर्थात आप के स्थान के प्रकटन के लिए अल्लाह तआ़ला ने परीक्षा के लिए एक फरिश्ते को मनुष्य की सूरत में धरती पर भेजा। जिस द्वार से हज़रत खलील अलैहिस सलाम अपनी बकरियां लेकर जाते थे। इसी द्वार में वह फरिश्ता मानव का रूप धारण कर के ऊंचे ठेले पर बैठ गया एवं अल्लाह का ज़िक्र (वर्णन) में व्यस्त हो कर बुलंद आवाज़ के कहने लगाः

भाषांतरः- मेरा रब पवित्र और सम्मान वाला है। फरिश्तों और हज़रत जिब्रील का पालनहार है।

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने जब अपने प्रिय की तसबीह सुनी तो इस की आवाज़ से इन को आनन्द हुआ, आप ने इन से फरमायाः

भाषांतरः- ऐ मानव! मेरे रब का ज़िक्र दोबारा सुनाओ। मैं तुम्हें अपना आधा धन प्रदान करुँगा। इस ने दोबारा तसबीह व तखदीस के गुन गाए। आप ने फरमायाः मेरे रब का ज़िक्र दोबारा करो। मेरा प्रत्येक प्रकार का धन व सम्पत्ति जो बकरियां, गुलाम तथा जो कुछ तुम देख रहे हो वह सारे का सारा तुम्हारे लिए ही है।

(रूह उल बयान, जिल्द 7, पः 474, अस साफातः 104/105)

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने अपना धन अल्लाह तआ़ला का वर्णन के लिए खर्च कर के बता दिया के अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत में इस दर्जा फना हो जाओ के धन की मुहब्बत व प्रेम तुम्हे अल्लाह के मार्ग में कर्च करने से ना रोके। संसार और संसार की सम्पत्ति रब ने प्रदान की है तो इस सांसारिक सम्पत्ति के बिना अल्लाह तआ़ला से उ़खबा सम्पत्ति खरीदनी चाहे।

परलोक के स्तर और उच्च दर्जे का प्रश्न करना चाहिए। इस के विरुद्ध धन की मुहब्बत में मग्न हो कर आखिरत से अज्ञानता करना। उखबा की दौलत से वंचित हो जाना और अल्लाह के द्वार में खर्च ना करना, बंदगी की अपेक्षा नहीं।

समुदाय के लिए सत्य का आमंत्रण

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम अपन क़ौम व समुदाय को लगातार सत्य का आमंत्रण देते रहे। मूर्ति पूजा (सगुणोपासना) के दुष्प्रबाव व परिणाम वर्णन करते रहे और एक अल्लाह की इ़बादत से लोक व परलोक में कया लाभ हैं। यह समझाते रहे।

धर्म के निमंत्रण के मैदान में आप ने लगातार परिश्रम की, किन्तु समुदाय ने बातिन व भीतरी के कोर के कारण से सत्य का आमंत्रण को स्वीकार ना किया।

अग्नि प्रकोप पुष्पवाटिका बन गया

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम लगातार मार्गदर्शन का आमंत्रण देते एवं मूर्ति पूजा से मना करते रहे। लोगों के दिल चौंके मसक़ हो चुके थे इसी लिए इन्हों ने मजबूत दलीलों के बावजूद हिदायत ना पाई तथा ना इस की प्रसारण में भाग लिया।

बल्कि सत्य के मार्ग से रोकने की कोशिशें की और हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को चोट व हानि पहुंचाने लगे। जब लोग आप के दलीलों के सामने निर्बल हो गए तो आप को आग में डालने के सुझाव करने लगे और नियोजन बनाने लगे।

लोगों ने कहा एक बडी रचना बना कर इस में आग को खूब दहकया जाए और आप को इस आग में डाला जाए। क़ुरान शरीफ इन का कथन इस प्रकार वर्णन रहेः-

भाषांतरः- वे कहने लगेः उन के लिए अग्नि-कुण्ड बनाओ। फिर इन को फिर इन को दहकी आग में ढालदो।

(सुरह अस सफ्फातः 37:97)

और सुरह अल अंबिया में वर्णन हैः-

भाषांतरः- लोगों ने कहा (हज़रत) इबराहीम को जला दो, और अपने देवताओं के, यदि तुम्हें कुछ करना है।

(सुरह अल अंबियाः 21:68)

इस आयत के प्रति अल्लामा खाज़ी सना उल्लाह नक्षबंदी पानी पत्ती रहमतुल्लाहि अलैह तफसीर मज़हरी में लिखते हैः-

भाषांतरः- हज़रत इब्न असहाख ने परमायाः लोगो ने एक महीना लकडियां जमा कीं। जब लकडियां जमा कर चुके तो सम्पूर्ण लकडियों में आग जलाई। फिर आग भड़क उठी एवं इस के शोले इतने बुलंद होने लगे के यदि कोई पक्षी इस के पास से भी गुज़रता तो इस की गरमी की अतिशय से मर जाता। इन्हों ने 7 दिन इन लकडियों को जलत रहने दिया। अब इन्हें यह मालूमनहीं हो रहा था के इस भड़कती आग में हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को कैसे डालें? मानव का उच्च शत्रु शैतान आ गया। इस ने इन्हें मंजनीख बनाने की शिक्षा दी एवं इस के द्वारा फेंकने का सुझाव दिया। वे हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को एक बुलंद इमारत (भवन) पर ले गए। आप के हाथ पैर बाँध कर मंजनीख में डाल दिया। इस दृश्य को देख कर जिन्न व मानव के सिवा धरती व आकाश की प्रत्येक चीज़ निकल गई। जब इन्हों ने आप को आग में डाने का उद्देश्य किया तो पानी का फरिश्ता सेवा में उपस्थित हुआ एवं निवेदन कियाः ऐ इबराहीम अलैहिस सलाम! यदि आप चाहें तो मैं इस आग को पूरी तरह से बुझा दुँ? हवा का फरिश्ता आया निवेदन कियाः इबराहीम अलैहिस सलाम! यदि आप चाहें तो मैं इस आग को हवा से उडा दुँ। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने

उत्तमता का प्रदर्शन करते हुए कहाः मुझे तुम्हारी सहायता की कोई अवश्यकता नहीं। मेरा अल्लाह काफी है और वह श्रेष्ठतर कारसाज़ है।

(अल तफसीर अल मज़हरी, सुररह अल अंबियाः 68)

भाषांतरः- हज़रत उबई बिन कअ़बू रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है के हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को आग में डालने के लिए जब इन्हो ने बाँधा तो आप ने ... पढा। पिर इन्हों ने आप को जब मंजनीख में बिठा दिया इस समय हज़रत जिब्रील अलैहिस सलाम उपस्थित हुए। विनती कीः ऐ इबराहीम अलैहिस सलाम! मै कोई सेवा करने के योग्य हुं तो उपस्थित हुँ। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने फरमायाः ऐ जिब्रील ! मुझे तुम्हारी मदद की कोई अवश्यकता नहीं। जिब्रील अलैहिस सलाम ने निवेदन कियाः अपने रब से ही विनती कर लीजिए। फरमायाः वह मेरी परिस्थिति से अच्छी तरह सचेत है मुजे निवेदन करने की ओक अवश्यकता नहीं।

(तफसीर अल बग़वी, सुरह अल अंबियाः 68। अल तफसीर अल मज़हरीः सुरह अल अंबियाः 68)

इस के बाद इन अत्याचारों ने आप को मंजनीख के द्वारा आग में फैंक दिया। जैसे ही आप आग के खरीब हुए अल्लाह तआ़ला ने आग को ठण्डी होने का आदेश दिया। अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- हम ने कहाः ऐ आग! इबराहीम पर ठण्डी और सलामती बन जा।

(सुरह अल अंबियाः 21:68)

इस आयत के प्रति तफसीर मज़हरी के लेखक फरमाते हैः-

भाषांतरः- नामवर रिवायतों मेंहै अल्लाह तआ़ला ने जब आग को ठण्डी होने का आदेश फरमाया तो इस दिन धरती पर कोई आग दहकती ना रही सब बुझ गईं और संसार मे किसी व्यक्ति ने इस दिन आग से कोई लाभ ना उठाया। फिर यदि अल्लाह तआ़ला, इबराहीम अलैहिस सलाम पर सलामती, ना फरमाता तो आग हमेसा के लिए ठण्डी हो जाती।

आग पूर्व की तरह जलाने की गुण से स्थापित थी किन्तु अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम के लिए इसे चोट और हानि से खाली कर दिया जैसा के *अ़ला इबराहीम* के शब्द दलील देते हैः-

भाषांतरः- अल्लामा सदी कहते हैं फरिश्तों ने हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को बाजूओं से पकड़ा और बडे आराम धरती पर बिठा दिया। जब आप इस अग्नि कुण्ड में उतरे तो वहाँ बैठे पानी का नहर था और सर्क़ रंग के गुलाब के सुन्दर फूल थे। हज़रत कअ़ब फरमाते हैं आग ने हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम का बाल भी बेकाना किया किन्तु जब रस्सियों से आप को बाँधा गया था इन्हें जला दिया। उलेमा फरमाते हैं हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम आग में 7 दिन रहे थे। मनहाल बिन उ़मरो फरमाते हैं गुज़ारे दही दिन मेरे जीवन के उत्तम दिन ते। अल्लाह तआ़ला ने इन दिनों में विशेष उपहार से नवाज़ा था। इब्न ऐस्सार फरमाते हैं साये के फरिश्ते को हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम की स्थिति में भेजा। वह हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम के पहलू में बैठ कर मुहब्बत व स्नेह की बातें करता था। फरमाते हैं अल्लाह तआ़ला ने जिब्रील अलैहिस सलाम को जन्नत से रेशमी वस्त्र और जायनमाज़ देकर भेजा। जिब्रील अलैहिस सलाम ने वस्त्र आप को पहना दिया एवं जायनमाज़ पर बिठा दिया और फिर जिब्रील अलैहिस सलाम ने कहा ऐ इबराहीम अल्लाह तआ़ला फरमाता है कया तुम्हें मालूम नहीं के आग हमारे प्यारों को कोई हानि नहीं पहुंचाती।

www.Ziaislamic.com

फिर नमरूद ने अपने राजमहल की बालकनी से हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को देखा तो अनोख दृश्य देखा के हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम एक बाग़ीचे में बैठे हुए हैं तथा फरिश्ता आप के पहलू में बैठ कर वार्तालाप कर रहे हैं। जबके आप के अतराफ आग लकडियों को जला रही है। नमरूद ने अपने राजमहल के ऊपर से आवाज़ दी, ऐ इबराहीम! आप के रब की क़ूदरत का यह करिश्मा है के इस ने आप के बीच और आग के बीच अपनी सुरक्षा से जो रोक लगा दी उसे देख रहा हुँ ऐ इबराहीम! कया आप इस आग से निकल भी सकते हैं फरमाया हाँ। फिर नमरूद ने पूछा कया आप को कोई संदेह है के यदि आप इस में ठहरे रहें तो यह आग आप को जला देगी? फरमाया नहीं। नमरूद ने कहा फिर खडे हो जाए ं और बाहर निकल आएं। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम आग के शोलों के बीच से चलते हुए बाहर आए। जब आप बाहर आ चुके तो नमरूद ने पूछा ऐ इबराहीम! आग में आप के साथ कौन था? वह तो बिल्कूल आप की तसवीर (चलचित्र) था तथा आप के पहलू में बैठा था। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने फरमाया वह साये का फरिश्ता था। अल्लाह तआ़ला ने इसे मेरी ओर भेजा था ताकि मेरी तन्हाई की इकताहट को दूर करे तो नमरूद ने कहा मैं आप के अल्लाह के लिए क़ुर्बानी देना चाहता हुँ क्यों के मैं ने देखा है के आप ने सारे खुदाओं की इ़बादत से मुंह मोड़ कर इस की इ़बादत और तौहीद को अपनाया तो इस ने जो आप के साथ भला व्यवहार करने में अपनी क़ूदरत का करिश्मा दिखाया है इस से मैं बहुत प्रभावित हुआ हुँ। मैं इस की सन्तुष्टि व प्रसन्नता के लिए 4000 गाय ज़िबा करुँगा। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने फरमाया जब तक तो मुशरिकों के विश्वास पर रहेगा और इस गलत धर्म का पालन करेगा अल्लाह तआ़ला तेरी क़ुर्बानी स्वीकार नहीं करेगा। तू अपना यह झूठा धर्म छोडेगा तब ही तेरी कोई क़ुर्बानी क़ुर्बानी स्वीकार होगी। नमरूद ने कहा मैं अपनी सलतन्त तो छोड नहीं सकता। आप का धर्म अपनाने में मुझे अपनी बादशाही से हाथ धोने पढेगे किन्तु मैं इस के लिए गायं ज़िबा करुँगा। तो नमरूद ने गायं

ज़िबा कीए और हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को कोई हानि पहुंचाने से रुक गया। इस प्रकार अल्लाह तआ़ला ने इसे यह नज़ारा दिखा करहज इबराहीम अलैहिस सलाम को इस की आज़ादियों एवं पाबंदियों से बचा लिया। शुअ़ब जबाई फरमाते हैं जब हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को आग में डाला गया तो इस समय आप की उ़म्र 16 वर्ष थी।

(अल तफसीर अल मज़हरी, सुरह अल अंबियाः 21:69)

अल्लाह तआ़ला ने आग को ठण्डी होने के साथ सलामती व कुशल बन जाने का आदेश दिया। क्यों के कोई चीज़ अधिक ठण्डी हो जाए तो हानिकारक की आशंका होती है। इस लिए फरमायाः ऐसी ठण्डी हो के सरदी भी ना होने पाय।

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को नहीं जलाया। आगप में जलाने की शक्ति व क्षमता जिस पालनहार रखी है उसी का आदेश हुआ के सलामति के साथ ठण्डी होजा।

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम सन्तुष्टि व प्रसन्नता के स्थान पर थे। आप ने सन्तुष्टि के पैकर बन कर आग में डाले जाने को स्वीकार किया के यदि निर्णय अल्लाह तआ़ला का यही है और जान जाती है तो जाए। मैं हर स्थिति में अपने रब के निर्णय को स्वीकार करने वाला एवं इस के मंशा के अनुसार ही चलने वाला हुँ।

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम आग से कुशल व सलामत बाहर तशरीफ लाय। आग आप को साधारण भी हानि व नुकसान ना पहुंचा सकी। इस विशाल चमत्कार को देख कर भी वह लोग इसलाम से आभूषण नहीं हुए तो आप ने अल्लाह तआ़ला के आदेश के अनुसार अपना देश छोड़ दिया और वहाँ से प्रवासन कर के सीरिया देश की ओर निवास फरमाया।

जैसे के अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- और आप ने कहा मैं ऐसे स्थान पर जाने वाला हुँ जहाँ का रब ने आदेश दिया। अवश्य वह मुझे मंज़िल तक पहुँचाएगा।

(सुरह अस साफ्फातः 37:99)

अ़ल्लामा खाज़ी सना उल्लाह पानी पत्ती रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः- ह़ज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम जब आग से कुशल व सलामत बाहर आए और मुशरिक इतनी बड़ी करामत व चमत्कार देख कर भी इ़मान ना लाय तो आप ने फरमाया मैं तुम्हारे कुफ्र के स्थान को छोड जा रहा हुँ एवं मैं ऐसे स्थान की ओर जा रहा हुँ जहाँ मैं सुकून व राहत के साथ अपने रब की इ़बादत करुंगा। जब आप आग से सलामति के साथ आए तो फरमाया अपने रब की ओर जा रहा हुँ। वह मेरे ऐसी जगह मार्गदर्शन करेगा जहाँ मेरे धर्म की सुधारता होगीया या अर्थ के मैं वहाँ का खसद करुँगा जहाँ के मेरा रब मुजे आदेश फरमाएगा तो आप सीरिया तशरीफ ले आए। ह़ज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम नमरूद के भय व खौफ से बाबल की धरती से ह़ज़रत सारह को ले कर निकल पड़े एवं ह़ज़रत सारह अपने ज़माने की सम्पूर्ण महिलाओं से अधिक सुन्दर थीं एवं आप मिस्र के हुदूद से गुज़रे, जबके मिस्र का फिरअ़ोन इस समय सादिफ बिन सादिफ था। (मिस्र के राजा की उपाधि फिरअ़ोन होता था) इस ने ह़ज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम से ह़ज़रत सारह को छीन लिया तथा इन्हें अपने राजभवन में ले गया। अल्लाह तआ़ला ने ह़ज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम के लिए दीवारों एवं परदों को अण्डे के परदे के तरह बारीक बना दिया ताकि आप ह़ज़रत सारह को देखते रहें और आप का दिल निश्चित रहे। आप अत्यन्त ग़ैरत

मंद व्यक्ति के मालिक थे। जब इस अत्याचारी ने हज़रत सारह का उद्देश्य किया तो राजभवन में भूकम्प हज़रत सारह के कारण से है वह दूसरे राजभवन में बदल हो गया तो वह भी लरज़ने लगा। वह तीसरे भवन में चला गया तो वह इसी प्रकार लरज़ने लगा तो आप की पत्नी वापस कर दी। हज़रत सारह ने कहा यह सब कुछ इबराहीम अलैहिस सलाम के कारण लरज़ा रहे हैं। फिरऔन ने हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को आप की पत्नी वापस कर दी। एक और रिवायत में है के जब फिरऔन ने हज़रत सारह की ओर हाथ बढाया तो इस का हाथ शल हो गया। इस ने हज़रत सारह से विनती की तथा दुआ के लिए निवेदन किया। हज़रत सारह ने इस की श्रेष्ठा के लिए दुआ की। इस का हाथ प्रथम के प्रकार पूर्णतया ठीक हो गया। फिरऔन ने दोबारा आप की ओर हाथ बढाया फिर वह मफलूज (जिसको फालिज व लकवा हुआ) हो गया। इस ने दोबारा आप से दुआ के लिए निवेदन किया एवं वादा किया के फिर ऐसी हरकत नहीं करेगा। हज़रत सारह ने दुआ की तो वह हाथ ठीक हो गया। इस बेग़ैरत ने तीसरी बार फिर हाथ बढाया, वह हाथ फिर शल हो गया। अब इस ने वचन खाई के अब यदि हाथ ठीक हो गया फिर कभी भी ऐसी हरकत नहीं करुँगा। हज़रत सारह ने दुआ की एवं हाथ ठीक हो गया। इमाम अहमद ने अपनी मुसनद में तथाइमाम बुखारी एवं मुस्लिम ने हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित किया है के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया एक दिन हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम हज़रत सारह की मअत में एक राजा के पास से गुज़रे। जब के इस राजा को प्रथम सूचना दी गई थी के यहाँ एक पुरुष आया है जिस के साथ एक सुन्दर महिला है। राजा ने हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को बुलाया और सारह के संबंधित पूछा के इस से तुम्हारा कया रिश्ता व नाता है? आप ने फरमाया वह मेरी बहन है। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ये उत्तर दे कर जब सारह के पास गए तो फरमाया ऐ सारह धरती पर मेरे और तुम्हारे सिवा कोई मोमिन नहीं है। इस अत्याचारी राजा ने तुम्हारे संबंधित मुझ से

पूचा तो मैं ने कहा वह मेरी बहन है तो मेरी तकज़ीब ना करना। (क्यों के इसलाम और इ़मान के रिश्ते से सच्चाई में तुम मेरी बहन हो) राजा ने हज़रत सारह को बुलाया। जब आप राजा के दरबार में पहुंची तो इस ने गलत उद्देश्य से आप की ओर हाथ बढाया किन्तु वह शल हो गया। राजा ने हज़रत सारह से दुआ के लिए निवेदिन किया एवं कहा मैं तुम्हें कोई तकलीफ व हानि नहीं पहुंचाउंगा। हज़रत सारह ने दुआ की इस का हाथ टीक हो गया. राजा ने अपने दरबारी को बुलाया और कहा तू मेरे पास किसी मानव को नहीं किसी जिन्न को लाया है। राजा ने हज़रत सारह को सेवा के लिए एक दासी हाजिरा पेश की। जब हज़रत सारह हाजिरा को ले कर हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम के पास पहुँची तो खडे हो कर नमाज़ पढ रहे थे। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने हाथ से इशारे से फरमाया कया हुआ? हज़रत सारह ने फरमाया अल्लाह तआ़ला ने फाजिह के मकर और साजिश को इस के सीने में लौटा दिया एवं इस ने मुझे सेवा के लिए हाजिरा दासी दी है।

हज़रत सारह से हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को कोई औलाद नहीं होती थीं इन्हों ने हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम से कहा के हाजिरा एक योग्य महिला है इन्हें अपनी सेवा में स्वीकार कर लें हो सकता है के इन से आप को कोई औलाद हो जाए।

नंदन होने के शुभ समाचार

अब तक आप को औलाद ना हुई थी। इस प्रवासन के बाद आप ने कायनात के रब से विनती की के औलाद के वरदान प्रदान करें.

भाषांतरः- ऐ मेरे रब! मुझे नेक संतान प्रदान कर।

(सुरह अस साफ्फातः 37:100)

अल्लाह के प्रिय बन्दों की दुआ अवश्य स्वीकार होती है। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम की दुआ व प्रार्थना स्वीकार हुई। अल्लाह तआ़ला ने आप को संतान होने की हिम्मत बुलंद करने की शुभ समाचार प्रदान किया। अर्थात अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- तो हमें ने इन्हें एक सहनशील पुत्र की शुभ सूचना दी।

(सुरह अस साफ्फातः 37:101)

इस आयत में कलिमे *ग़ुलाम* के द्वारा बताया गया के हज़रत खलील को लडका होगा और वह ऐसी उ़म्र पाएंगे जिस में बुद्धि कमाल व बुलंदी तक पहुंचती है एवं मानव का शुमार सन्तुलित में होने लगता है। (खाज़िन सुरह अस साफ्फातः 37:101)

हज़रत इबराहीम का आदर्शवादी परिवार

यहाँ हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम से एक और परीक्षा ली जाती है। उ़म्र के इस भाग में संतान प्रदान किया गया। फिर आदेश होता है के अपने नंदन और पत्नी को एक ऐसे स्थान पर छोड़ आओ जहाँ ना कोई घांस हो ना पानी, अल्लाह के आदेश के समापन में आप ने अपने छोटे से नंदन को सुमसाम स्थान पर छोड दिया।

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम, हज़रत हाजिरा अलैहिस सलाम एवं अपने नंदन को मक्के ले आए। और इन्हें बैतुल्लाह शीरफ के निकट एक पेड़ के नीचे बिठा दिया।

इस समय मक्के में ना कोई मानव था और ना ही वहाँ पानी उपलब्ध था। आप ने इन्हें एक चमड़े का थैला दिया जिस में खजूर थे और पानी से भरा हुआ एक छोटा कठोरा दिया।

जब आप वापस जाने लगे तो हज़रत हाजिरा अलैहिस सलाम निवेदन करने लगीं- आप हमें इस जंगल में छोड कर कहाँ जा रहे हो। जहाँ ना कोई मानव है और ना कोई और वस्तु? वह बार-बार यही कहती रहीं किन्तु हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने इन्हें मुड कर भी नहीं देखा।

जब हज़रत हाजिरा अलैहिस सलाम ने विनती कीः कया अल्लाह तआला ने आप को ऐसा करने का आदेश दिया है? आप ने फरमायाः हाँ। तो हज़रत हाजिरा अलैहिस सलाम ने कहाः पिर तो अल्लाह हमें व्यर्थ नहीं करेगा। यह कह कर वह विश्राम के साथ वापस लौट आएं और हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम भी वहाँ से चले गए।

जब आप संबिय पर्वत पर पहुंचे जहाँ से वह आप को नहीं देख सकते थे। वहाँ रुक गए और कअ़बा शरीफ की ओर रुक़ किया और अपने तस्ताहे उठा कर इन कलिमात के साथ दुआ कीः ऐ हमारे पालनहार! मैं ने अपनी औलाद को तेरे प्रतिष्ठित घर (काबा) के पास एक ऐसी घाटी में जहाँ कृषि-योग्य भूमि पर ठहराया।

ऐ हमारे पालनहार! ताकि यह नमाज़ें पढें। और तू लोगों के दिलों को ऐसा कर दे के इन की ओर झुके रहें। और इन को फलों से आजीविका प्रदान कर। ताकि वह तेरा कृतज्ञ व धन्यवाद करें।

(सुरह इबराहीमः 14:37)

सहीह बुखारी शरीफ में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमायाः महिलाओं में सर्व प्रथम हज़रत इसलमाइल अलैहिस सलाम की माता सैयदा हाजिरा अलैहिस सलाम ने कमर पट्टा बाँधा। फिर हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने आप को और आप के नंदन हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम को (मक्के) ले आए। एवं हाजिरा अलैहिस सलाम (उस समय) हज़रत इसमाइल अलैहिस सलाम को दूध पिलाती थीं तथा इन्हें बैतुल्लाह के निकट मसजिद की बुलंद ओर एक वृक्ष के नीचे बिठा दिया जो इस स्थान पर है जहाँ अब ज़मज़म है। इस समय मक्के में कोई आबाद ना था। और ना ही वहाँ पानी था। फिर हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने इन सदस्य को वहाँ बिठाया तथा चमड़े का एक थैला खजूरों से (भरा हुआ) एवं पानी से भरा हुआ एक छोटा मठका दिया। फिर जब आप वापस जाने लगे तो हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम की माता इन के पीछे हुईं एवं हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम से विनती करने लगीं! हमें इस घाटी में छोड़ कर कहाँ जा रहे हो के जहाँ ना कोई पूछने वाला है और ना कोई और वस्तु? हज़रत हाजिरा अलैहिस सलाम ने बार-बार यही शब्द दोहराए किन्तु हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने इन्हें नहीं देखा तो हाजिरा अलैहिस सलाम ने कहा के कया अल्लाह ने ऐसा करने का आदेश दिया है? हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने फरमयाः हाँ इन्हों ने उत्तर दिया के फिर तो अल्लाह तआ़ला हमें व्यर्थ होने नहीं देगा। यह कह कर वे वापिस लौट आईं एवं हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम वापिस जाने लगे जहाँ तक के

जब इस पहाड़ी पर पहुंचे जहाँ से आप इन्हें दिखाई ना दे सकते थे तो आप ने कअ़बा शरीफ की ओर रुक़ किया फिर इन कथन के साथ दोनों हाथ बलुंद कर के प्रार्थना कीः ऐ हमारे पालनहार! मैं ने अपनी संतान को तेरे प्रतिष्ठित घर (काबा) के पास एक ऐसी घाटी में जहाँ कृषि-योग्य भूमि पर ठहराया। ऐ हमारे पालनहार! ताकि ये नमाज़ें पढें। और तू लोगों के दिलों को ऐसा कर दे के इन की ओर झुके रहें। और इन को फलों से आजीविका प्रदान कर। ताकि वह तेरा कृतज्ञ व धन्यवाद करें।

(सुरह इबराहीमः 14:37)

और सैयदा हाजिरा अलैहिस सलाम ह़ज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम को दूध पिलाती और खुद मठके में से पानी पीती रहीं। यहाँ तक के मठके में पानी समाप्त हो गया। जिस के कारण आप को और आप के प्रिय नंदन को प्यास महसूस हुई। जब आप ने देखा के नंदन प्यास के कारण बेताब हो रहे हैं या फरमाया के ऐड़ियां रगड़ रहे हैं। तो वह इस दृश्य देख कर पानी की तलाश में निकल खडी हुईं। आप के सामने सफा पर्वत निकट ही था आप इस पर चढ़ गईं। फिर घाटी में देखा के शायद कोई नज़र आए परन्तु कोई भी नज़र ना आया फिर आप वहाँ से उतरें और अपना दामन समेट कर नशीब में इस प्रकार दौड़े जैसे कोई कठिनाई में दौड़ता है यहाँ तक के घाटी को पा कर के मरवा पहाडी पर पहुंची और इस पर चढ़ कर देखा के शायद कोई मानव नज़र आए परन्तु कोई नज़र ना आया। फिर इसी प्रकार (सफा व मरवा के बीच) 7 बार चक्कर लगाए। सैयदना अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने कहा के ह़ज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः इसी लिए लोगों के लिए दोनों (सफा व मरवा) के बीच सई़ घोषित की गई है फिर जब ह़ज़रत हाजिरा अलैहिस सलाम (अंतिम चक्कर में) मरवा पर चढीं तो इन्हों ने एक आवाज़ सुनी तो अपनेआप के दिल में विचार आया के इस को सुनना चाहिए। फिर वही आवाज़ सुनी तो कहने लगीं के (ए अल्लाह के बन्दे! तू

जो कोई भी है) मैं ने तेरी आवाज़ सुन ली। कया तू हमारी कोई सहायता कर सकता है? इसी बीच इन्हों ने देखा के ज़मज़म का पानी (बौली का स्थान) के निकट एक फरिश्ता (हज़रत जिब्रील) है जो धरती पर अपनी ऐड़ी मारा (या ये फरमाया के) अपना पैर मारा यहाँ तक के इस स्थान से पानी निकलने लगा। हज़रत हाजिरा अलैहिस सलाम अपने हाथ से (मिठ्ठी से) इस के अतराफ हौज़ सा बनाने लगीं और पानी चलू से भर भर कर अपने मठके में ड़ालने लहीं। जो जो वह पानी लेतीं वह बौली और जोश मारता जाता। सैयदना इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं के हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः अल्लाह तआ़ला इसमाइ़ल अलैहिस सलाम प्रिय माता पर रहम फरमाए। यदि वह ज़मज़म को इस के हाल पर छोड देतीं (हौज़ ना बनातीं) या (आप ने ये कहा) यदि वे चुलू भर कर (मठका भरने के लिए) पानी ना लेतीं तो ज़मज़म एक जारी रहन वाला बौली होता। (फिर रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने) आदेश फरमायाः हज़रत हाजिरा अलैहिस सलाम ने खुद भी पानी पिया और अपने नंदन को दूध पिलाया। फरिश्ते ने इन से कहा के तुम अपनी जान का खौफ व भय ना करो। निस्संदेह यहाँ अल्लाह का घर है। जिसे ये नंदन और इन की आदरणीय पिता रचना करेंगे और अल्लाह अपने बन्दों को व्यर्थ नहीं किया करता। और इस समय बैतुल्लाह (का स्थान) ठेली की ओर धरती से ऊंचा था और जब वर्षा का पानी आता तो वह दायं-बायं से निकल जाता। सैयदा हाजिरा अलैहिस सलाम ने एक समय तक इसी प्रकार समय बिताया यहाँ तक के जिरहम क़बीले के कुछ लोग या बनी जिरहम के कुछ सदस्य इन के पास से गुज़रे जो कदा के द्वार से आ रहे थे। वह मक्के की ओर उतरे। इन्हों ने पक्षियों को वहाँ घूमतेहुए देखा तो कहने लगे के ये पक्षी अवश्य पानी के यहाँ घूम रहे हैं। परन्तु हम इस घाटी से इच्छी तरह अनुभव है और यहाँ पानी कहीं भी नहीं है। पिर इन्हों ने 1 या 2 पुरुषों को पानी की स्थिति मालूम करने के लिए भेजा। इन्हों ने देखा के पानी उपलब्ध है। वे लौट कर गए और इन्हों ने पानी की

सूचना दी। फिर वे सब सदस्य वहाँ आए। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः पानी के पास ही इसमाइ़ल अलैहिस सलाम की प्रिय माता बैठी थीं। इन लोगों ने कहा के कया आप हमें यहाँ अपने पास आबाद होने की आज्ञा देती हैं? आप ने फरमाया के हाँ! आज्ञा है। परन्तु पानी में तुम्हारा कोई अधिकार नहीं होगा। इन्हों ने इसे स्वीकार कर लिया। सैयदना अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैं के नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः (जिरहम के) लोगों ने (वहाँ रहने की) इस समय आज्ञा मांगी जब खुद इसमाइ़ल की प्रिय माता ये चाहती थी के यहाँ बसती हो। अतः वे लोग वहीं आबाद हो गए और सन्देश भेज कर अपने परिवार व नातेदारों को भी इसी स्थान बुला लिया वे भी वहीं इन के पास आ गए।

(सहीह बुखारी, किताबुल अहादीसुल अंबिया, हदीस संख्याः 3364)

निश्चिंता का उच्च आदर्श

इस घटना के द्वारा समुदाय के महिलाओं को धीरज व सहनशीलता, निश्चिंता व निष्ठा की शिक्षा दी गई। दूध पीते बच्चे की उ़म्र में बच्चों को विशेष नज़र में रखा जाता है। इन का विशेष रूप से ख्याल रखा जाता है क्यों के इस उ़म्र में बच्चों के शरीर के भाग नाज़ूक होते हैं मिज़ाज में नज़ाकत व लताफत होती है।

दूध पीते बच्चे को तन्हा माता के साथ सुमसाम व वीरान स्थान पर चोडना। असामान्य घटना है। इस घटना में पुरुष लोग की बी शिक्षा है और महिलाओं की भी। हज़रत हाजिरा अलैहिस सलाम के उत्तर में समुदाय के बेटियों के लिए विशाल प्रवचन व सन्देश है के जब आप ने इतना सुना के यहाँ अल्लाह तआ़ला के आदेश के अनुसार लाया गया है तो बिना किसी सोंच व चिन्ता के सम्पूर्ण विश्राम के साथ वहीं रुक गईं।

चैन व विश्राम पाया। बाहर रूप से वहाँ ना कोई देखने-करने वाला है और नाकोई हम-दम व सहायता करने वाला, ना घांस है ना पानी, ना कोई देखने वाला है, ना कोई सुरक्षा करने वाला.

अल्लाह तआ़ला की जात पर इस प्रकार सम्पूर्ण विश्वास और इस के अनुदान पर सम्पूर्ण विश्वास था के फरमायाः जब ये सब अल्लाह तआ़ला के आदेश से है तो हमें वे व्यर्थ नहीं करेगा। आप विश्राम से वापिस जाएं।

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम की प्रार्थना व दुआ, हज़रत हाजिरा अलैहिस सलाम की धर्मनिष्ठा एवं हज़रत इसमाइल अलैहिस सलाम की बरकत से अल्लाह तआ़ला ने वहाँ ज़म-ज़म का कुआं जारी कर दिया।

अंबिया का उत्तर- वही के दर्जे में

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम का जीवन में परीक्षा का एक सिलसिला रहा। जो केवल आप की प्रतिभा व वैभव का प्रकट के लिए था। निष्ठा व परीक्षा की एक और उच्च मंज़िल ये थी के पालनहार ने दुआओं के बाद जो स्वाद व मधुरता प्रादन की और इनके संबंधित मान्य शुभ-सूचना अनुदान किएं।

सुन्दरता व बुद्धिमानी और कई एक जवाहिर का मालिक बनाया। जब वह पिता के साथ निश्त करने लगे। खलवत में हम-दम रहने लगे और अल्लाह तआ़ला की प्रदान योग्यता से आदरीणीय पिता का हृदय को प्रसन्न करने लगे।

वह नंदन जो दिल का तुकडा है, वा बेटा जो खलील के चमन की बहार हुए, अल्लह तआ़ला ने इन्हीं को अपनी राह में क़ुर्बान (त्याग व बलिदान) करने का आदेश दिया और आदेश भी दिया तो जागने की स्थिति में नहीं बल्कि सपने के द्वारा आदेश दिया।

अंबिया किराम अलैहिमु वरिज़वान का सपना बी अल्लाह की वही होती है। जैसा के तफसीर इब्न कसीर में इरशाद नबवी हैः-

भाषांतरः- अंबिया किराम अलैहिमु वरिज़वान का सपना वही के दर्जे में है।

(तफसीर इब्न कसीर, सुरह अस साफ्फातः 103)

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम के निष्ठा व दृढ़ता पर क़ुर्बान जाएं तो कम हैं। हमें इस से फैज़ प्राप्त करते हुए इन कार्य में धर्मनिष्ठ बन्ना चाहिए। जिन पर कर्म हमारे लिए कटिन होता है। जब अपनी स्थिति अपने अनुसार नहीं रहती, तबियत उचित नहीं होती या कोई और रुकावट आ जाती है तो हमारी भावना कम हुआ करती है।

हम अपनी स्थिति पर नज़र डालें तो हमारी हिम्मत बंद जाएगी। हमारी भावना व उत्साह बुलंद होगा और हम निष्ठा व दृढ़ता व धर्मनिष्टा के साथ शरीअ़त पर कारबंद हो जाएंगे।

प्रिय राजकुमार की क़ुर्बानी का आदेश

हज़रत इसमाइल अलैहिस सलाम जब चलन फिरने की उ़म्र को पहुंचे तो हज़रत खलील उल्लाह (इबराहीम) अलैहिस सलाम को इस राजकुमार की क़ुर्बानी का आदेश दिया गया।

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम अल्लाह तआ़ला के आदेश के समापन का मजबूद इरादा किया। आप ने चुरी और रस्सी ले कर अपने प्यारे नंदन से कहाः प्यारे बेटे! मेरे साथ चलो। हमें अल्लाह के लिए क़ुर्बानी करनी है। नंदन साथ हो गए। मीना की घाटी में पूछाः बाबा! हमें किसी चीज़ की क़ुर्बानी करनी है? आप ने इस समय फरमाया, जैसा के अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- जब वह इबराहीम अलैहिस सलाम के साथ दौड़ने की उ़म्र को पहुंचे तो इन्हों ने कहाः ऐ मेरे प्रिय बेटे! मैं स्वप्न देखता हुँ के तुम्हें क़ुर्बान कर रहा हुँ। बताऊ! तुम्हारा क्या विचार है?

(सुरह अस साफ्फातः 34:102)

जिस समय क़ुर्बानी की जा रही थी इस समय हज़रत इसमाइल अलैहिस सलाम की उ़म्र 13 वर्ष थी। इस कम वर्ष में राजकुमार नंदन ने जां निसारी का जिस निष्ठा के साथ उत्तर दिया- वह बडे से बडे बुद्धिमान के लिए आदर्श है। बहादुरों के लिए हिम्मत व उत्साह की भावना देती है, निवेदन कियाः ऐ पूज्य पिता! आदेश के समापन में ना मैं पीछे हटुँगा और ना ही आप पर मुहब्बत प्रभावित आएगी।

आप ने खलत का ताज पहन रखा है और क़ुर्बान करने का जोश व उत्साह मेरे रगों में मौज मारता है।

अल्लाह तआ़ला क़ुरान करीम में आदेश फरमाता हैः-

भाषांतरः- ऐ मेरे आदरणीय पिता! आप को जो आदेश दिया जा रहा है इस को पूरा कर डालिए। यदि अल्लाह ने चाहा तो निस्संदेह आप मुझे धैर्यवान पाएंगे।

(सुरह अस साफ़्फात: 37:102)

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने राजकुमार नंदन से इस लिए सुझाव किया के आप इन के सहनशीलता व धर्मनिष्ठा तथा परीक्षा के समय साबित खदम को देखना चाहते थे। आप ना केवल एक पिता थ बल्कि पैगम्बर, समुदाय के गुरु भी थे।

यदि नंदन से हिचक प्रकट हो तो धीरज का उपदेश करना भी उद्देश्य था परन्तु ऐसी कोई स्थिति प्रकट ना हुई। क्यों सकती है जबके हज़रत ज़बि उल्लाह अलैहिस सलाम, निष्ठा के पैकर नबी के राजकुमार नंदन हैं, आप ने मिसाली साबित खदमी और सन्तुष्टि का प्रदर्शन किया।

हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम ने अपनी जात पर सम्पूर्ण विश्वास ना किया बल्कि ये विचार कियाः मैं हमेशा अल्लाह तआ़ला से नज़दीकी व खौफ का आज्ञाकारी हुँ। खुद से कुशल कार्य नहीं कर सकता और ना बुराई से बच सकता हुँ इसी लिए इनशा अल्लाह कहा। तफसीर के लेखक अल्लामा खाज़िन रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः- अल्लाह तआ़ला के बचाय बिना पाप से बचना सम्भव नहीं एवं पालन व आज्ञाकारी पर प्रभाव व दबाव, हिम्मत व वीरता भी इसी के मार्गदर्शन से है। इसी लिए सहनशीलता को अल्लाह से नज़दीकी के साथ ही ज़िक्र किया।

(तफसीर अल खाज़िन, जिल्द 4, पः 24, सुरह अस साफ़्फातः 102)

हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम ने आदरणीय पिता से ये विनती नहीं की के जो आप देख रहे हैं इसी प्रकार कर गुज़रें बल्कि निवेदन कियाः आप को जो आदेश दिया जा रहा है इस का संपादन कीजिए। कम उ़म्र के बावजूद बुद्धिमानी व सुबोध और इ़मान की यह स्थिति है के पूज्य पिता के सपने को वही के दर्जे में जानते हैं और विश्वास रखते हैं।

शैतान की ओर से फूट डालने की असफल कोशिश

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने जब राजकुमार नंदन को क़ुर्बानी के लिए चले तो शैतान बेचैन व व्याकुल हो गया। इस ने अल्लाह के आदेश पर हज़रत खलील अलैहिस सलाम की संवेदना देखी तो इस कुशल कर्म को रोकने के लिए फरेब व छल व कपट से काम लिया और कहा के हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम के राजकुमार नंदन आज परीक्षा में असफल ना करुँ तो इन्हें फिर कभी असफल ना कर सकुँगा।

शैतान एक मानव के भेस में हज़रत ज़बी उल्लाह अलैहिस सलाम के आदरणीय माता के पास आया और कहने लगाः कया आप जानती भी हैं के इबराहीम (अलैहिस सलाम) नमाज़ आप केबेटे को साथ क्यों लिया? आप ने कहा हाँ! जंगल से लकडियां चुन्ने के लिए।

www.Ziaislamic.com

शैतान ने कहाः नहीं वे तुम्हारे दुलारे व अतिप्रिय राजकुमार नंदन को ज़िबा करना चाहते हैं। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने घर में इस का प्रकट नहीं किया था। माँ ने कहाः ये नहीं हो सकता। मैं जानती हुं हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम अपने बेटे से कितना प्रेम व स्नेह रखते हैं।

शैतान ने कहा ये तो सही है किन्तु इन का विचार है के अल्लाह तआला ने इन्हें इन के नंदन की क़ुर्बानी का आदेश दिया। ये सुन कर हज़रत इसमाइल अलैहिस सलाम की माता ने फरमायाः हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम यदि ये कहते हैं के अल्लाह तआला ने इन्हें इस बात का आदेश दिया है तो इन्हों ने बहुत अच्छा किया।

जो अपने रब के पालन में लग गएं। शैतान यहाँ से मायूस हो कर लौट गया और हज़रत इसमाइल अलैहिस सलाम के पास पहुँचा। आप अपने पिता के पालन में पीछे-पीछे चल रहे थे।

शैतान आप के पास आया और कहने लगाः ऐ इसमाइल! पिता कहाँ ले जा रहे हैं। कया तुम्हे सूचना भी है? हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम अभी नंदन को वर्णन नहीं किए थे।

आप ने फरमायाः हाँ! इस जंगल से लकडियां जमा करने के लिए ले जा रहे हैं।

इस ने कहाः नहीं नहीं! पिता आप को ज़िबा करना चाहते हैं। आप ने पूछा वह क्यों? इस ने कहा अल्लाह तआला ने इन को आदेश दिया है।

हज़रत इसमाइल अलैहिस सलाम ने फरमायाः अल्लाह ने जो आदेश दिया पूज्य पिताजी को इस का संपादन करना चाहिए। शैतान वहाँ से भी असफल लौटा।

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम के पास आया और पूछाः कहाँ का उद्देश्य है? आप ने फरमायाः इस घाटी में कुछ कार्य के लिए जा रहा हुँ। शैतान ने कहाः मुजे पता है के शैतान ने आप को सपने में बेटे की क़ुर्बानी करने की बात दिल में डाली।

ये सुन कर हज़रत खलील उल्लाह अलैहिस सलाम ने फरमायाः ऐ रब के विरोधी! निकल जा, दूर हो जा, मैं अपने रब का आदेश को संपादन करुँगा।

इस प्रकार शैतान अपनी सम्पूर्ण कोशिशों एवं छल व कपट के बावजूद मायूस व असफल, निराश हो गया।

(तफसीर अल खाज़िन, जिल्द 4, पः 24, सुरह अल साफ़्फातः 37;102)

कंकड़ियों के द्वारा शैतान पर नबूवत की मार

कुछ रिवायात में आया है के शैतान, हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम के द्वार में 3 बार रुकावट डालने के लिए आया। आप ने हर बार इस पर कंकडियां मारीं। नबूवत की मार को ना सुन कर अधिक हस्तक्षेप करतने की हिम्मत ना कर सका।

जैसा के तफसीर खाज़िन में हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमायाः हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को जब अपने नंदन की क़ुर्बानी का आदेश दिया गया तो अचानक शैतान आ गया आप जुमरह ऱखबा के पास पहुंचे तो शैतान वहाँ आया, आप ने इस को 7 कंकडियां मारीं तो वह चला गया। फिर जमरह वसता के पास आया। आप ने वहाँ भी उसे 7 कंकडियां मारीं तो वे भाग गया। फिर जुमरह उखरा के पास आया तो आप ने 7 कंकडियां मारीं, यहाँ तक के वह चला गया। इस के बादहज इबराहीम अलैहिस सलाम ने अल्लाह तआ़ला के आदेश का समापन किया।

(तफसीर अल खुरतुबी, सुरह अस साफ्फातः 37:102, जिल्द 4, पः 24 / सहीह इब्न खुज़ैमा, हदीस संख्याः 2738 / अल मुसतदरक अ़ला सहिहैन, हदीस संख्याः 1666)

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने ज़िबा करने के लिए अपने दुलारे व प्यारे को धरती पर औंधा लिटा दिया, ताकि चहरा दिखाई ना दे के कहीं प्रेम व स्नेह के कारण अल्लाह के आदेश को समापन करने में देरी ना हो जाए। स्वंय इस विचार से के ज़िबा करुँ तो अल्लाह के दरबार में कहीं अनादर ना हो। निवेदन किया! पूज्य पिताजी! मेरे भाग बाँध दीजिए ताके मुझ से बेचैनी ना होने पाय।

फिर हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम को विचार पैदा हुआ के अल्लाह के दरबार में क़ुर्बानी हो रहा हुँ और रस्सी से बँधा हुआ होंगा तो ऐसा मालूम होगा के जैसे क़ैदी की तरह बलपूर्वक और तबियत की नागवारी के साथ उपस्थित हुआ हुँ।

इस विचार के साथ ही आदरणीय पिता से निवेदन किए के मुझे खोल दीजिए। जैसा के नुज़हतुल मजालिस में हैः-

भाषांतरः- हज़रत इसमाइल अलैहिस सलाम ने अपने पूज्य पिताजी से निवेदन कियाः मेरी रस्सी खोल दीजिए। लोग ये ना कहें के पिता ने ज़बरदस्ती ज़िबा कर ड़ाला। और वे नहीं जान सकेंगे के मैं आज्ञाकारी व खुद ही से साथ अपनी जान-जान अल्लाह के हाले कर रहा हुँ।

(नुज़हतुल मजालिस)

और अपना दामन समेट रखिए के मेरे खून के छींटे आप के दामन पाक पर ना आएं और मेरा वस्त्र हो सके तो मेरी माँ को दीजिए ताकि इन को वस्त्र से तसल्ली होती रहे।

हज़रत खलील अलैहिस सलाम ने नंदन को बोसा दिया और इन के हाथ पांव बाँध कर छुरी गले पर चलाई किन्तु छुरी ने गला कांटा नहीं। आप ने 3 बार पत्थर पर छुरी को तेज किया परन्तु छुरी को कांटने का आदेश ना था।

ये स्थिति देख कर बेटे ने निवेदन कियाः पिताजी! मुझे मुंह के बल रखिए के कहीं आप की नज़र पड़ जाए तो स्नेह के कारण अल्लाह के आदेश का संपादन में विलम्भ ना हो जाए। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने आप की गरदन पर भी छुरी चला कर परीक्षित किया। परन्तु छुरी उलटी हो गई।

क़ुर्बानी करने के लि इस अतिरिक्त कोई और अ़मल बाखी ना था। जो जो परिस्थिती थे, हो चुके छुरी तेज की गई, हलक़ पर और गरदन पर चलाई गई किन्तु छुरी तेज़ और धारीदार होने का बावजूद कांटी ना थी। जाँ निसारी का ये कर्म जारी हीथा के स्वीकृत की गवाही मिल गई और आवाज़ आई, अल्लाह तआ़ला ने फरमायाः

भाषांतरः- जब वे दोनों ने अल्लाह के आदेश को स्वीकार किया और पिता ने बेटे को पेशानी के बल लिटा दिया और ज़िबा करने लगे तो हम ने इन्हें सूचना दी के ऐ इबराहीम! सचमुच आप ने सपना सत्य कर दिखाया। अवश्य हम मोहसिनों को ऐसा ही बदला देते हैं।

(सुरह अस साफ्फात, 104, तफसीर खाज़िन, जिल्द 4, पः 24)

तफसीर दुर्रेमन्सूर में रिवायत व्याख्या हैः-

भाषांतरः- हज़रत अ़ता बिन यस्सार रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमायाः मैं ने ख्वात बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से हज़रत ज़बी उल्लाह अलैहिस सलाम के बारे में पूछा, तो आप ने फरमायाः हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम 7 वर्ष की उ़म्र को पहुंचे तो हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने अपने घर में जो सीरिया देश में निवास था। सपना देखा के आप इन्हें (हज़रत इसमाइल अलैहिस सलाम) ज़िबा कर रहे हैं। तो सवार हो कर उन के पास गए। यहाँ तक के इन के पास गए। आप ने इन्हें इन की माँ के यहाँ पाया। इन के दोनों हाथों को पकडा एवं इस कार्य के लिए चले जिस का आप को आदेश दिया गया था। शैतान ऐसे मानव के भेस धारण कर के आया जिसे आप पहचानते थे। फिर उन लगे के किनारों पर छुरी चलाने लगे। ऐसा मालूम होता था के तांबे पर छुरी

चला रहे हैं। तो हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने पत्थर से 2 या 3 बार छुरी तेज की परन्तु छुरी नहीं कांटी थी। कया देखते हैं के आप के सामने दुंबा खडा है। इबराहीम अलैहिस सलाम ने फरमायाः ऐ प्यारे बेटे! उठो तुम्हारी जान का फिदया आ चुका है फिर आप ने (जानवर) ज़िबा कर दिया। ये घटना तात्पर्य में रोनुमा हुआ।

(अल दर्रुल मनसूर, सुरह अस साफ्फातः 107)

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने धीरज व सहनशीलता व सन्तुष्टि का विशाल आदर्श पेश किया। अल्लाह तआ़ला के आदेश पर अपने राजकुमार नंदन को क़ुर्बान करने के लिए तैयार हो गए।

हज़रत खलील उल्लाह अलैहिस सलाम खुद निष्ठा व दृढ़ता के पैकर बने रहे और अपने नंदन की भी ऐसी शिक्षा की के शहज़ादा भी क़ुर्बान होने के लिए तैयार है।

इस के बाद हज़रत हाजिरा अलैहिस सलाम का देहान्त हुआ। बाद में सैयदना इसमाइ़ल अलैहिस सलाम का विवाह हुआ। फिर जब अल्लाह तआ़ला का आदेश आता तो सैयदना इबराहीम अलैहिस सलाम और आप के नंदन हज़रत सैयदना इसमाइल अलैहिस सलाम ने कअ़बे शरीफ की निर्माण किया। इस के संबंधित सहीह बुखारी में हदीस पाक दर्शन कीजिएः-

भाषांतरः- यहाँ तक के जब वहाँ कई घर आबाद (जनाकीर्ण व आवास) हो गए और इसलमाइ़ल अलैहिस सलाम लकड़पन की उ़म्र को पहुंचे तो इन्हों ने अरबी इन (जिरहम के) लोगों से सीखी और हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम इन्हें आदतें और विशिष्ठा के अनुसार से बडी लक्ष नज़र आए तो इन्हों अपने परिवार की एक इसमाइ़ल अलैहिस सलाम की आदरणीय माता का देहान्त हो गया। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम, इसमाइ़ल अलैहिस सलाम के विवाह के बाद अपने नंदन को सूचना लेने के लिए आए जिन्हें

वह छोड कर गए थे। परन्तु हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम घर पर नहीं पाया। तो इबराहीम अलैहिस सलाम ने इन की पत्नी से इन के बारे में पूछा। इन्हों ने कहा के भोजन की भरण-पोषण की तलाश में गए हैं। इबराहीम अलैहिस सलाम ने इन की दैनिक समय और धन सम्बन्धी की स्थिति के बारे में पूछा। तो इन्हों ने उत्तर दिया के हम मफलूक अलहाली में हैं। दरिद्रता व कठिनाई में जीवन बिता रहे हैं। इस प्रकार आप से खूब शिकायत की। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने फरमायाः जब तुम्हारे पति आएं तो इन्हें मेरी ओर से सलाम कहना और ये कहना के अफेन दरवाज़े की चौखट बद दे। फिर जब इसमाइ़ल अलैहिस सलाम घर में आए और (अपने पिता की) कुछ सुगन्ध महसूस की तो (पत्नी से) कहा के कया हमारे घर कोई आए थे? इन्हों ने कहाः हाँ! एक बुज़ुर्ग व्यक्ति इस भेस व शकल के आए थे। तथा इन्हों ने आप के बारे में पूछा तो मैं ने बता दिया के आप संपोषण व जीविका की तलाश में गए हैं और इन्हों ने मुझ से पूछा के तुम्हारे गुज़र बसर कैसे होती है? तो मैं ने कहा के बड़ी कठिनाई और परेशानी में समय गुज़र रहा हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम ने पूछा के कया इन्हों ने तुम्हें कोई वसीयत की थी? उत्तर दियाः हाँ! इन्हों ने मुझ से कहा था के मैं आप को सलाम कह दुं और ये भी कहा के आप अपने दरवाज़े की चौखट बदल डालें। हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम ने फरमाया के वह मेरे आदरणीय व पूज्य पिताजी थे और इन्हों ने मुझे आदेश दिया के मैं तुम्हें छोड दुँ। तुम अपने घर वालों में चली जाठ। फिर आप ने इन्हें तलाक दे दी और (जिरहम क़बीले में से) किसी दूसरी महिला से विवाह किया। फिर जब तक अल्लाह तआ़ला को स्वीकार था हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम अपने देश में ठहरे रहे फिर इस के बाद दोबारा आए तो इस बार भी अपने प्रिय बेटे को घर पर ना पाया। तो इन की पत्नी के पास जाकर पूछा तो इन्हों ने कहा के वे हमारे लिए रोज़ी की तलाश में गए हैं। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने फरमाया के तुम्हारी स्थिति कैसी है? एवं इन की रहन-सहन और मालगुजारी के संबंधित पूछा। तो

इन्हों ने उत्तर दिया के अल्लाह का धन्यवाद है हम बहुत कुशल व शिथिलता के साथ बडे आराम से जीवन बिता रहे हैं। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने पूछा के तुम कया खाते हो? उत्तर दिया के गोश्त, फिर पूछा के काय पीते हो? उत्तर दियाः पानी। आप ने फरमायाः ऐ अल्लाह! इन के लिए गोश्त और पानी की बरकत प्रदान कर। हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः इन दिनों वहाँ गला नहीं होता था। यदि होता तो हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम इस में भी बरकत की दुआ़ कर देते। फिर फरमायाः इन दोनों चीज़ों पर मक्के के सिवा और किसी स्थान गुज़ारा नहीं किया जा सकता। क्यों के ये मिज़ाज के अनुसार नहीं करेंगे। हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने इन से फरमायाः जब तुम्हारे पती आएं तो इन्हें मेरा सलाम कहना और इन्हें मेरा आदेश भी पहुंचाना के अपने दरवाज़ें की चोखट को सुरक्षित से रखना। फिर जब हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम आए तो अपनी प्रिय पत्नी से पूछा के हमारे घर कोई आए थे? उत्तर दियाः हाँ! एक सुन्दर से बुज़ुर्ग आए थे। फिर इन की बड़ी प्रशंसा की और कहा के इस बुज़ुर्ग ने आप से संबंधित पूछा तो मैं ने बता दिया। पिर हमारे अजीविका के बारे में प्रश्न किया तो मैं ने निवेदन किया के जीवन बहुत अच्छी तरह गुज़र रहा है। हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम ने पूछा के इन्हों ने तुम्हें कोई वसीयत भी की है? उत्तर दियाः हाँ इन्हों ने आप को सलाम कहा और फरमाया के तुम अपने दरवाज़े की चौखट को सुरक्षा से रखना। हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम ने फरमाया के वे मेरे आदरणीय पिताजी थे और तुम दरवाज़े की चौखट हो। आप ने मुझे आदेश दिया है के तुम्हें अपने संबंध में रखुँ। फिर जब तक अल्लाह तआ़ला को स्वीकार था हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम (अपने देश में) ठहरे रहे। इस के बाद जब आए तो हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम इस समय चाह ज़मज़म के निकट एक वृक्ष के नीचे बैठे अपने तीर श्रेष्ठ कर रहे थे। जब इन्हों ने हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को देखा तो स्वागत के लिए तुरंत उठ खडे हुए। और पूज्य पिताजी ने अपने नंदन के साथ

करुणा की, और बेटे ने पिता के साथ आदर व सम्मान के वे सम्पूर्ण अपेक्षा समापन किएजो ऐसे पिता और ऐसे बेटे की शान थे। फिर फरमाया के ऐ इसमाइ़ल! निस्संदेह अल्लाह तआ़ला ने मुझे एक आदेश दिया है। हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम ने निवेदन किया के अल्लाह तआ़ला ने जो आदेश दिया उसे संपादन करें। आप ने फरमाया के कया तुम मेरी मदद करोगे। उन्हों ने कहाः मैं अवश्य मदद करुँगा। आप ने फरमायाः अल्लाह ने मुझे ये आदेश दिया है के इस स्थान पर एक घर बनाउँ और एक ऊंचे ठेले और इस के हुदूद की ओर इशारा फरमाया। सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः इस समय दोनों सदस्य ने बैतुल्लाह शरीफ (कअ़बा) की नीव उठाना शुरु की। हवायों के हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम पत्थर लाते जाते थे और हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम रचना फरमाते। जब दीवारें ऊंची हो गईं तो इसमाइ़ल अलैहिस सलाम एक पत्थर ले आए और इस को रख दिया फिर इबराहीम अलैहिस सलाम इस पर खडे हो कर दीवार की रचना करते और इसमाइ़ल अलैहिस सलाम इन्हें पत्थर ला कर देते और दोनों लोग युं निवेदन करतेः ऐ हमारे पालनहार! तू हम से स्वीकार कर। निस्संदेह तू ही सुनने वाला जानने वाला है। सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमाया वे दनों लोग कअ़बा शरीफ के निर्माण (संरचना व विधान) करते रहे यहाँ तक के बैतुल्लाह शरीफ के गिर्द ये कहते हुए फिरते रहे। ऐ हमारे पालनहार! तू हम से स्वीकार कर। अवश्य तू ही सुनने वाला जानना वाला है।

(सुरह अल बक़रहः 127) (सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 3364)

हज़रत खलील उल्लाह अलैहिस सलाम को जब औलाद के द्वारा परीक्षा ली गई तो आप ने औलाद की क़ुर्बानी पेश की। जब जान के द्वारा परीक्षा ली गई तो जान क़ुर्बान करने तैयार हो गए।

अल्लाह तआ़ला ने आप की हर क़ुर्बानी स्वीकार फरमाया। हज़रत इसमाइ़ल अलैहिस सलाम के बदले जन्नत का दुंबा ज़िबा किया गया और हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम को आगे में ड़ाला गया तो अल्लाह तआ़ला के आदेश आग ठण्डी और सलामती वाली हो गई।

सैयदना इबराहीम अलैहिस सलाम का अनेक तरीक़ों से परीक्षा व निरीक्षण लिया गया और आप प्रत्येक परीक्षा में सफल हो गए। हर परीक्षा पर धीरज व सहनशीलता की चट्टान और धर्मनिष्ठा के पहाड़ बने रहे।

बड़े से बडी परीक्षा आप के पाय निष्ठा व दृढ़ता में ज़रा सा भी अंतर ना लासका। कठिन से कठिन परीक्षा आप की साबित खदमी को बदल ना सकी।

अल्लाह तआ़ला आप की याद को क़यामत तक के लिए बाखी रखा। आप की प्रिय जीवन से हमें ये सन्देश प्राप्त होता है के समस्या व कठिनाई चाहे कितनी ही कठिन क्यों ना हों. बन्दे को चाहिए के हमेशा धीरज व सहनशीलता को प्राप्त करे निष्ठा व दृढ़ता का प्रदर्शन करें। अपने विश्वास व अखीदे व इ़मान पर स्थापित रहे और हर स्थिति में सन्तुष्ट रहें।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है के हज़रत खलील उल्लाह अलैहिस सलाम के धीरज व सहनशीलता व धर्मनिष्ठा के सदखे और सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के तुफैल हमें धर्म पर साबित खदम प्रदान करे और इ़मान पर हमारा खात्मा करे।

आमीन